

प्रश्न-उत्तर

रचना से संवाद – मेरे उत्तर मेरे तर्क

प्रश्न १. "अब कैसे छूटै राम रट लागी" पंक्ति का भाव है?

- (क) नाम उच्चारण की कठिनाई
- (ख) नाम रटकर याद करना
- (ग) आराध्य का नाम जपना
- (घ) मित्रों का नाम रटना
- **तर्क (उपयुक्तता):** इस पंक्ति का मूल भाव यह है कि भक्त के अंतःकरण में ईश्वर के नाम की ऐसी गहरी लगन लग चुकी है कि अब भगवान का नाम जपना उसकी सहज आदत बन गया है, जो किसी भी बाह्य परिस्थिति से छूट नहीं सकता।

प्रश्न २. "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" पंक्ति में आराध्य और भक्त का संबंध किस रूप में व्यक्त हुआ है?

- (क) एकाकार और समरूप
- (ख) तरल और तीव्र सुगंध
- (ग) आश्रय और आश्रित
- (घ) द्रव और ठोस
- **तर्क (उपयुक्तता):** चंदन और पानी मिलकर इस प्रकार एक हो जाते हैं कि पानी का अपना रंग लुप्त हो जाता है और वह चंदन की सुगंध से महक उठता है। यह भक्त का ईश्वर में पूरी तरह लीन और एकाकार होने को दर्शाता है।

प्रश्न ३. "तुम दीपक, हम बाती" से रैदास का क्या भाव है?

- (क) दीपक और बाती का कोई मेल नहीं होता है।
- (ख) दीपक बिना बाती भी जल सकता है।
- (ग) भक्त आराध्य से अधिक महत्वपूर्ण है।
- (घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।
- **तर्क (उपयुक्तता):** दीपक और बाती का संबंध प्रकाश उत्पन्न करने के लिए अनिवार्य है। भक्त (बाती) जब आराध्य (दीपक) के प्रेम में जलता है, तभी उसका संपूर्ण जीवन ज्ञान के अलौकिक प्रकाश से आलोकित और सार्थक होता है।

प्रश्न ४. "जो तुम तोरौ राम मैं नहीं तोरौ" पंक्ति में रैदास का क्या आशय है?

- (क) परोपकारी भक्ति भाव
- (ख) आराध्य से अटूट संबंध
- (ग) सांसारिक मोह

(घ) कर्मकांड पर बल

- **तर्क (उपयुक्तता):** इस पंक्ति से रैदास यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि उनका और उनके राम का संबंध किसी सांसारिक स्वार्थ पर नहीं टिका है। यह एक ऐसा शाश्वत और अटूट नाता है जिसे स्वयं ईश्वर भी तोड़ना चाहें, तो भक्त की निष्ठा उसे टूटने नहीं देगी।

प्रश्न ५. "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" पंक्ति से आप क्या समझते हैं?

(क) तीर्थ और व्रत आवश्यक नहीं हैं।

(ख) तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं।

(ग) तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है।

(घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

- **तर्क (उपयुक्तता):** रैदास का मानना है कि यदि मन में ईश्वर के प्रति सच्ची प्रीति और निष्ठा है, तो किसी भी बाहरी कर्मकांड जैसे तीर्थ यात्रा या कठिन उपवास (व्रत) की कोई आवश्यकता या संशय नहीं रह जाता; प्रभु के चरणों में ही सर्वोपरि आश्रय प्राप्त हो जाता है।

प्रश्न ६. सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा किस पंक्ति में व्यक्त होती है?

(क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा"

(ख) "जाकी जोति बरै दिन राती"

(ग) "तुम दीपक, हम बाती"

(घ) "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा"

- **तर्क (उपयुक्तता):** "जहँ जहँ जाओ" (मैं जहाँ भी जाता हूँ) पंक्ति सीधे यह प्रतिपादित करती है कि ईश्वर किसी एक मंदिर, मस्जिद या तीर्थ स्थान में सीमित नहीं है, बल्कि वह कण-कण में, हर दिशा में सर्वव्यापक रूप से विद्यमान है।

अर्थ और भाव

प्रश्न (क) "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

- **अर्थ:** हे प्रभु! आप आकाश में छाए हुए काले बादल (घन) हैं और मैं उस बादल को देखकर आनंद से नाचने वाला वन (बन) का मोर हूँ। जिस प्रकार चकोर पक्षी रात-भर चंद्रमा (चंद) को एकटक देखता रहता है, वैसे ही मैं आपको निहारता हूँ।
- **भाव:** इस पंक्ति में भक्त की अनन्य प्रीति और विस्मयकारी समर्पण व्यक्त हुआ है। जैसे मोर बादलों के बिना और चकोर चंद्रमा के बिना नहीं रह सकता, वैसे ही रैदास का मन भी अपने आराध्य के दर्शन के बिना व्याकुल रहता है। यहाँ प्रकृति के माध्यम से ईश्वर के प्रति अगाध खिंचाव को दर्शाया गया है।

प्रश्न (ख) "तीर्थ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।"

- **अर्थ:** मुझे मोक्ष या पुण्य पाने के लिए किसी बाहरी तीर्थ स्थान पर जाने या कठिन व्रत रखने की कोई चिंता या संशय नहीं है, मुझे केवल आपके कोमल चरण-कमलों पर ही पूर्ण भरोसा है।
- **भाव:** इस पंक्ति में संत कवि ने **बाह्य आडंबरों और रूढ़ियों का कड़ा खंडन** किया है। मध्यकाल में प्रचलित अंधविश्वासों पर चोट करते हुए रैदास यह स्थापित करते हैं कि सच्ची मुक्ति शारीरिक कष्ट (व्रत) या धन खर्च करके यात्रा (तीर्थ) करने में नहीं, बल्कि अंतर्मन से ईश्वर के प्रति अडिग विश्वास और निष्ठा रखने में है।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न १. "जो तुम तोरौ राम मैं नहीं तोरौ" पंक्ति में रैदास की अपने आराध्य में अटूट निष्ठा का भाव है। इससे आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

- **उत्तर:** इस पंक्ति से हम यह समझते हैं कि वास्तविक भक्ति किसी बाहरी समझौते या स्वार्थ की मोहताज नहीं होती। आम तौर पर सांसारिक संबंध तभी तक चलते हैं जब तक दोनों ओर से लाभ हो, परंतु रैदास की भक्ति 'एकतरफा पराकाष्ठा' पर है। वे अपने राम को यह चुनौती भरे आदर के साथ कहते हैं कि यदि आप अपनी तरफ से मेरा त्याग भी कर दें, तो भी मेरी निष्ठा इतनी सुदृढ़ है कि मैं आपको छोड़ना स्वीकार नहीं करूँगा। यह भाव सिद्ध करता है कि भक्त ने अपने 'अहंकार' को पूरी तरह मिटा दिया है। जब आत्मा का परमात्मा से ऐसा नाता जुड़ जाता है, तो उसे संसार का कोई भी भय या ईश्वर की उदासीनता भी तोड़ नहीं सकती। यही अडिग विश्वास ही संत मत की मुख्य मूक्या रीढ़ है।

प्रश्न २. रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर किस साधन को भक्ति का प्रमुख आधार माना है? आपके विचार से भक्ति के क्या आधार हो सकते हैं?

- **उत्तर:** रैदास ने बाह्य कर्मकांडों (तीर्थ और व्रत) के स्थान पर **मन की शुद्धता, आंतरिक आत्मीयता, अडिग विश्वास और आत्म-समर्पण** को ही भक्ति का प्रमुख आधार माना है।
- **मेरे विचार से भक्ति के आधार:** आज के परिप्रेक्ष्य में भक्ति के निम्नलिखित वास्तविक आधार होने चाहिए:
 1. **मानव सेवा (परहित):** किसी भूखे को अन्न देना और असहाय की सहायता करना ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है।
 2. **नैतिक आचरण:** जीवन में ईमानदारी बनाए रखना, झूठ और कपट का त्याग करना अंतःकरण को शुद्ध करता है, जो भक्ति की पहली शर्त है।
 3. **समदृष्टि:** सभी मनुष्यों को बिना किसी जाति, धर्म या वर्ग के भेदभाव के समान समझना और उनसे प्रेम करना, क्योंकि ईश्वर हर जीव के भीतर विद्यमान है।

प्रश्न ३. दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को किन-किन प्रतीकों/उपमाओं से व्यक्त किया गया है? लिखिए।

- **उत्तर:** दोनों पदों में भक्त और आराध्य के अटूट संबंध को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित अनुपम प्राकृतिक और व्यावहारिक प्रतीकों व उपमाओं का प्रयोग किया गया है:

क्र.सं.	आराध्य (ईश्वर) के लिए प्रयुक्त प्रतीक	भक्त (रैदास) के लिए प्रयुक्त प्रतीक	संबंध का दार्शनिक अर्थ
१	चंदन (सुगंध का स्रोत)	पानी (साधारण माध्यम)	अंग-अंग में सुगंध का समाहित होना (एकाकार होना)।
२	घन (आकाश के काले बादल)	मोरा (जंगल का नाचता मोर)	ईश्वर को देखकर भक्त के मन का मयूर होकर नाचना।
३	चंद्र (पूर्ण चंद्रमा)	चकोरा (एकटक देखने वाला पक्षी)	आराध्य के दर्शन के लिए निरंतर लालायित रहना।
४	दीपक (ज्ञान का प्रकाश)	बाती (जलने वाली बत्ती)	प्रभु प्रेम में स्वयं को जलाकर अंतर्मन को आलोकित करना।
५	मोती (उज्ज्वल और मूल्यवान)	धागा (जोड़ने का सूत्र)	आराध्य की यादों को अपने भीतर पिरोकर रखना।
६	सुहागा (सोने को शुद्ध करने वाला)	सोना (मूल्यवान धातु)	ईश्वर के संपर्क में आकर आत्मा का पूर्ण शुद्ध हो जाना।
७	स्वामी (मालिक/प्रभु)	दासा (सेवक/दास)	पूर्ण शरणागति और दास्य-भाव का समर्पण।

विधा से संवाद: कविता का सौंदर्य एवं अलंकारों की पहचान

(क) पाठ्यपुस्तक के निर्देशों के अनुसार अलंकारों वाली अन्य पंक्तियों की खोज:

- अनुप्रास अलंकार (व्यंजन वर्णों की आवृत्ति):
 - "जाकी अंग-अंग बास समानी" — यहाँ 'अंग-अंग' में 'अ' वर्ण की आवृत्ति तथा प्रकाश रूप है।
 - "जैसे चितवत चंद्र चकोरा" — यहाँ 'च' वर्ण की आवृत्ति बार-बार होने से अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।
- उपमा अलंकार (समानता/तुलना):
 - "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" — आराध्य की तुलना चंदन से और भक्त की पानी से की गई है।
 - "प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा" — यहाँ 'जैसे' वाचक शब्द का प्रयोग कर उपमा अलंकार स्थापित है।
- रूपक अलंकार (अभेद आरोप):
 - "तुम्हरे चरण कमल एक भरोसां" — यहाँ चरणों (उपमेय) पर कमल (उपमान) का सीधा आरोप करके उन्हें 'चरण-कमल' (कमल रूपी चरण) कहा गया है, अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

(ख) पदों की साहित्यिक विशेषताओं की विवरणात्मक तालिका:

साहित्यिक विशेषता	विशेषता का अर्थ	पाठ से सटीक प्रामाणिक उदाहरण
अनन्य भक्ति भाव	आराध्य के अतिरिक्त किसी अन्य का आश्रय न लेना।	"जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।"

सरल और लोकधर्मी भाषा	आम जनता द्वारा आसानी से समझी जाने वाली व्यावहारिक ब्रज।	"तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"
उपमा और तुलना	प्राकृतिक तत्वों से भक्त-भगवान के संबंध को मापना।	"प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।"
लयात्मकता / गेयता	संगीतात्मकता, जिसे राग और लय में गाया जा सके।	"अब कैसे छूटै राम रट लागी। प्रभु जी तुम चंदन हम पानी..."
दृढ़ निष्ठा और आस्था	हर परिस्थिति में अपने विश्वास पर टिके रहना।	"सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।"

विषयों से संवाद

प्रश्न १. तीर्थ और व्रत के स्थान पर रैदास ने आराध्य की भक्ति को प्रधान माना है। कबीर भी निराकार की भक्ति पर बल देते हैं। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर इसके क्या कारण हो सकते हैं?

- उत्तर: मध्यकाल (१५वीं शताब्दी) में भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ अत्यधिक जटिल और बाह्य आडंबरों से घिरी थीं। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित थे:
 1. **जातिगत विषमता और छुआछूत:** समाज में वर्ण-व्यवस्था कड़ी थी। दलितों और समाज के निचले तबके के लोगों को मंदिरों में प्रवेश करने या वेदों को सुनने की अनुमति नहीं थी। ऐसे में रैदास और कबीर जैसे संतों ने 'निराकार ईश्वर' की संकल्पना दी, जो किसी खास मंदिर या मूर्ति में नहीं, बल्कि हर मनुष्य के घट (हृदय) में वास करता है।
 2. **ब्राह्मणवाद और मुल्लावाद का प्रभाव:** धर्म के नाम पर पुरोहितों और मौलवियों ने महंगे यज्ञों, कठिन व्रतों और दूर की तीर्थ यात्राओं को मोक्ष का माध्यम बता रखा था, जिसे गरीब जनता वहन नहीं कर सकती थी। संतों ने भक्ति को अत्यंत सरल और मुफ्त (केवल नाम सुमिरन) बनाकर धर्म को आम जनता के लिए सुलभ कर दिया।

प्रश्न २. "सोने मिलत सुहागा" — 'सुहागा' का रासायनिक नाम और उसकी विशेषताएँ विज्ञान के शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।

- उत्तर: 'सुहागा' का वैज्ञानिक परिचय निम्नलिखित है:
 - रासायनिक नाम (Chemical Name): बोरेक्स (Borax) या सोडियम टेट्राबोरेट डेकाहाइड्रेट (Sodium Tetraborate Decahydrate)।
 - रासायनिक सूत्र (Formula): $[\text{Na}_2[\text{B}_4\text{O}_5(\text{OH})_4] \cdot 8\text{H}_2\text{O}]$
 - मुख्य विशेषताएँ व उपयोग:
 1. **स्वर्ण शुद्धि (Flux के रूप में):** जब सोने को सुहागे के साथ मिलाकर गर्म किया जाता है, तो सुहागा सोने में मौजूद तांबे या अन्य धातुओं की अशुद्धियों को सोख लेता है और पिघले हुए सोने को अत्यधिक शुद्ध और चमकीला बना देता है।
 2. **कीटाणुनाशक:** यह एंटीसेप्टिक और क्लीनिंग एजेंट के रूप में उपयोग किया जाता है।

3. **काँच उद्योग:** इसका उपयोग प्रयोगशाला के मजबूत बोरोसिलिकेट काँच बनाने में किया जाता है।

भाषा से संवाद: व्याकरण की बात

१. पदों में से खोजे गए संज्ञा और सर्वनाम के तीन-तीन उदाहरण:

- संज्ञा शब्द (Noun): (1) चंदन, (2) दीपक, (3) मोती।
- सर्वनाम शब्द (Pronoun): (1) तुम, (2) हम, (3) तुम्हारे।

२. आंचलिक/प्राचीन शब्दों के आधुनिक मानक हिंदी रूप:

पद में आया प्राचीन शब्द PDF	आधुनिक मानक हिंदी रूप (Modern Equivalent) PDF
मोरा	मोर (मयूर)
चकोरा	चकोर (पक्षियों की एक प्रजाति)
बाती	बत्ती (दीपक की लौ वाली कपास की बत्ती)
राती	रात (रात्रि)
सोने	सोना (स्वर्ण)
तीरथ	तीर्थ (पवित्र धार्मिक स्थल)
बरत	व्रत (उपवास या संकल्प)

सृजन: रचनात्मक गतिविधियाँ

१. संवाद-लेखन: उपमाओं के आधार पर भक्त और आराध्य के बीच बातचीत

(स्थान: अंतर्मन का मंदिर, पात्र: आराध्य राम और भक्त रैदास)

आराध्य राम: "रैदास! तुम संसार के सभी कर्मकांड छोड़कर दिन-रात मेरे नाम की रट क्यों लगाए रहते हो?" **भक्त**

रैदास: "हे प्रभु! मेरा अपना कोई अस्तित्व कहाँ है? आप सुगंधित चंदन हैं और मैं केवल साधारण पानी हूँ, मेरा अंग-अंग आपकी सुगंध से ही महकता है।" **आराध्य राम:** "परंतु संसार तो मुझे बहुत दूर आसमान के बादलों में खोजता है, तुम मुझे कहाँ देखते हो?" **भक्त रैदास:** "प्रभु! जब आप गगन में काले बादल (घन) बनकर उमड़ते हैं, तो मेरा मन मोर बनकर नाचने लगता है। मैं आपको वैसे ही निहारता हूँ जैसे चकोर पक्षी पूरी रात चाँद को ताकता रहता है।" **आराध्य**

राम: "रैदास, तुम्हारी इस अनन्य भक्ति की लौ संसार को क्या संदेश देगी?" **भक्त रैदास:** "हे स्वामी! आप दीपक हैं और मैं आपकी बाती हूँ, जो स्वयं जलकर संसार को प्रेम और समानता का आलोक देगी। आप मोती हैं, मैं धागा हूँ; आपके संपर्क में आकर मुझ जैसा तुच्छ ताँबा भी सोने पर सुहागा बन जाता है।"

२. लघुकथा: "जो तुम तोरौ राम..." पंक्ति पर आधारित अटूट मित्रता

सच्ची मित्रता की गाँठ

सोहन और माधव एक ही गाँव के दो परम मित्र थे। सोहन एक धनी ज़मींदार का बेटा था और माधव एक अत्यंत निर्धन किसान का पुत्र था। समाज के लोग अक्सर माधव से कहते थे कि "सोहन बहुत अमीर है, एक न एक दिन वह तुमसे अपना नाता जरूर तोड़ लेगा, तुम उससे दूरी बना लो।" परंतु माधव को सोहन पर पूरा विश्वास था। एक वर्ष गाँव में भयानक अकाल पड़ा। माधव का पूरा परिवार दाने-दाने को तरसने लगा। विपत्ति के समय ज़मींदार ने माधव के पिता की ज़मीन ज़ब्त करने की योजना बनाई। माधव दुखी होकर सोहन के पास गया और बोला—"सोहन! तुम्हारे पिताजी मेरे परिवार को बर्बाद कर रहे हैं। शायद अब हमारी सामाजिक स्थिति के कारण हमारा संबंध टूट जाएगा।" सोहन ने भावुक होकर माधव के दोनों हाथ थामे और कहा—"माधव! मेरे पिताजी जो कर रहे हैं, वह गलत है और मैं उसके खिलाफ लड़ूँगा। लोग भले ही कुछ भी कहें, 'जो तुम तोरौ राम मैं नहीं तोरौ' की तर्ज पर यदि तुम भी मुझसे दूर जाना चाहोगे, तो भी मैं तुम्हारा हाथ कभी नहीं छोड़ूँगा। हमारी मित्रता पैसों की मोहताज नहीं है।" सोहन ने अपने पिता के विरुद्ध जाकर अपनी नक़द धनराशि माधव के परिवार को दी और उसकी ज़मीन बचाई। यह घटना सिद्ध करती है कि सच्ची निष्ठा और आत्मीय संबंध सांसारिक लाभ-हानि से परे होते हैं।

झरोखे से (संत नामदेव के पद एवं तुलना)

संत नामदेव के पदों का सरल भावार्थ

- **पद (१) का भाव:** नामदेव जी कहते हैं कि जब सृष्टि के प्रारंभ में न माता थी, न पिता थे, न कोई कर्म था और न यह भौतिक शरीर (काया) थी, तब भी परमात्मा का अस्तित्व था। इस संसार में कोई किसी का स्थायी सगा नहीं है, यह जीवन तो पेड़ (तरवर) पर पक्षियों के रैन-बसेरे के समान क्षणभंगुर है। गुरु की कृपा (गुरपरसादी) से ही उस परम तत्व का साक्षात्कार होता है।
- **पद (२) का भाव:** भगवान के नाम के बिना नामदेव का मन वैसे ही तड़पता (तालाबेली) है, जैसे बछड़े के बिना गाय अकेली व्याकुल होती है या पानी के बिना मछली (मीन) तड़पती है। गुरु से मिलते ही उस अलख (अदृश्य) ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।



संत रैदास और संत नामदेव के पदों में तुलनात्मक आलेख

तुलना का बिंदु	संत रैदास के पद	संत नामदेव के पद
१. वैचारिक समानताएँ	<p>* दोनों संतों ने बाह्य आडंबरों, तीर्थ-व्रत और रूढ़ियों का कड़ा विरोध किया है।</p> <p>* दोनों ही ईश्वर के निराकार (निर्गुण) रूप और नाम सुमिरन को सर्वोपरि मानते हैं।</p>	

	* दोनों संतों ने अपनी बात को समझाने के लिए व्यावहारिक लोक-प्रतीकों का प्रयोग किया है।	
२. प्रतीकों में अंतर	रैदास ने अपनी भक्ति को चंदन-पानी, दीपक-बाती और सोने-सुहागे के माध्यम से दास्य-भाव और आत्मीय समर्पण के रूप में दर्शाया है।	नामदेव ने ईश्वर के वियोग को 'गाय-बछड़े' और 'मछली-पानी' के उदाहरण से अत्यधिक विरह और व्याकुलता (तड़पन) के रूप में व्यक्त किया है।
३. भाषाई अंतर	रैदास की भाषा मुख्यतः सरल व्यावहारिक ब्रज है जिसमें अवधी और खड़ी बोली का सुंदर मिश्रण है।	नामदेव की भाषा में मराठी लोक-शैली का प्रभाव है, जिसमें 'तालाबेली' और 'छूटला' जैसे देशज शब्दों का पुट है।

Links और References (खोजबीन)

पाठ्यपुस्तक में दी गई इंटरनेट कड़ियों (लिंक्स) का विवरणात्मक विवरण निम्नलिखित है, जो रैदास की बानी को समझने में सहायक हैं:

-  **NCERT Official - रैदास के पद (गायन एवं व्याख्या):** <https://youtu.be/zZoAghETdgl> — विषय विशेषज्ञों द्वारा इन दोनों पदों को शास्त्रीय लय में गाने और उनके अर्थ समझाने का आधिकारिक वीडियो संदर्भ।
-  **संत रैदास जीवन दर्शन एवं आदि गुरु ग्रंथ साहिब:** <https://youtu.be/0vfpBMozOXY> — काशी (वाराणसी) में जन्मे संत रैदास की सामाजिक समरसता, प्रेम और भाईचारे के संदेश पर आधारित विशेष वृत्तचित्र।